केस स्टडी

कुँआ से मरछिया कुँअर का लगाव

टोला :– **मौजे टोला बीनटोली**
गाँव :– **तेल्हुआ**
पंचायत :– **दक्षिण तेल्हुआ**
प्रखण्ड :– **नौतन**
जिला :– **प0 चम्पारण**

जीवन परिचय :–

मरछिया कुँअर की उम्र 65 वर्ष है जो दक्षिण तेल्हुआ पंचायत के मौजे टोला बीनटोली गाँव में रहती है। उनके दो लड़के तथा एक लड़की है। सबसे बड़े लड़के का नाम रूदल मुखिया तथा छोटे लड़के का नाम राजवंषी मुखिया है। लड़की का नाम तेतर देवी है जिनकी शादी 14 किलोमीटर दूर लक्ष्मीपुर गाँव, नौतन में हुई है। मरछिया कुँअर के पति महादेव मुखिया का निधन 35 वर्ष पूर्व कयदस्त की बिमारी से हुआ था। मरछिया कुँअर स्वंय गाँव के सम्पन्न लोगों के खेतों में मजदूरी करके अपने बच्चों का पालन पोषण किया। इनके दोनों लड़के शादी के बाद अलग–अलग पारिवारिक जीवन बिता रहे है। घर की आर्थिक स्थिति आज भी खराब है। परिवार की पूरी जीविका मछली मारने तथा टोकरी बनाने के काम पर आश्रित है। सिर्फ एक एकड़ के लगभग जमीन दोनों भाइयों के बीच में विभाजित है। मरछिया देवी अपने सबसे छोटे लड़के राजवंषी के साथ रहती है।

इनकी परिवरिष (देख–भाल) के लिए सरकार के द्वारा प्रति माह 200/– का वृद्धा पेंषन मिलता है। जिस पैसे से वह बीड़ी, खैनी खरीद कर खाती है तथा थोड़ी राषि (50 रूपया) को बचाती भी है। इसी पैसे से नाती–पोतों के लिए थोड़ा समान भी खरीदती है। अपने छोटे लड़के में रहते हुए भी हमेषा दुखी रहती है क्योंकि इनकी पतोहू समय पर खाना–पीना नहीं देती है। इससे इनको काफी कष्ट होता है।

चपाकल से पेट की बिमारीः–

मरछिया कुँअर अपने जमाने में जब तक कुँआ से पानी पीती थी तब तक कोई बिमारी या पेट का कोई रोग नही होता था। हमेषा स्वस्थ रहती थी। लेकिन आज से तीस वर्ष पूर्व ज्योही गांव में चपाकल आया कुंआ बंद होने लगा और आज स्थिती यह है कि गांव में सिर्फ चपाकल ही दिखता है। चपाकल के पानी को पिने से स्वंय मरछिया देवी के पेट में हमेषा गैस्टीक, पेट में दर्द तथा सिर में चक्कर की स्थिति बनी रहती थी। ईलाज में करीब 2000/– से अधिक रूपया खर्च भी हो गया था। फिर भी ये स्वस्थ्य नहीं रहती थी।

कुँआ से जुड़ावः–

मौजे टोला बीनटोली गांव में ह्रदया सहनी के दरवाजे पर 30 वर्ष पूर्व से एक कुंआ है जो बंद पडा था। जिसमें बालू, मिट्टी व लकड़ी का कचरा भरा हुआ था, फर्स टूट गया था। 2007 में जब मेघ पाईन अभियान के साथियों द्वारा कुंआ को पुनः चालू कराने कि बात शुरू हुई तो इस कार्य में मरछिया कुँअर बढ़–चढ़ कर हिस्सा ली तथा सहयोग भी किया। परिणामस्वरूप मरछिया कुँअर की दिलचस्पी एवं गाँव के सहयोग से 15 फरवरी 2008 को कुंआ को विधिवत पुजा–पाठ एवं उद्घाटन करके, चालू कराया गया। इसी अवसर पर एक जल महोत्सव का आयोजन हुआ था। जिसमें एक हजार के आस–पास लोग शामील हुए थे। यह एक मेला का दृष्य था। सरकारी अधिकारीयों के साथ–साथ पंचायत प्रतिनिधियों, हाईस्कूल के षिक्षक–विद्यार्थी एवं गांव के सभी महिला पुरूषों ने भाग लिया। जिसमें मरछिया कुँअर ने कुंआ को पुनः चालू होने की खुषी में झुम–झुम कर गीत गायी थी– "हम चली अईली कोईला माता आष रे, दिन ये कोईला माता अपनी सुहाग रे, सब कर सुहाग मरी–मरी जाय रे, कोईला माता के सुहाग जन्म ऐहवात रे"। अर्थात कोईला माता कुंआ की देवी है जो कुंआ में ही रहती है उसी की कृपा से सभी जीवों को पानी मिलता है, लोग स्वस्थ्य रहते है। इसलिए महिलाएँ कोईला माता से आर्षिवाद लेती है तथा उनको हमेषा सुहागन रहने के लिए (कुँआ के पानी को चालू रखने के लिए) ईष्वर से दुआ करती है।

उसी दिन से प्रतिदिन मरछिया कुँअर एक बाल्टी सुबह और एक बाल्टी शाम को पानी अपने घर ले जाती है। अपने बच्चों को पिलाती है तथा स्वंय पीती भी है। घर में लाकर बाल्टी का पानी रखने से पानी गर्म हो जाता था। इसलिए वह बाजार गयी और 10 रूपया में एक मिट्टी का घड़ा लायी। उसी मिट्टी के घड़े में पानी भरकर आज भी लाती है, तथा सुरक्षित रखती भी है। अब उसके घर में सिर्फ पीने में प्रतिदिन 20 लीटर ठंडा पानी की खपत है। वह अपने 10 सदस्यों के साथ प्रतिदिन कुंआ के पानी का उपयोग करती है।

कुँआ के पानी से फायदाः–

15 फरवरी 2008 से मरछिया कुँअर कुंआ के पानी को पी रही है तभी से अब तक पेट का गैस्टीक, पेट का दर्द तथा सिर का चक्कर ठीक हो गया है। अब इनके परिवार के जो लोग इस कुंए के पानी को पिते है वे कभी डॉक्टर के पास नहीं जाते है। यह महिला गाँव में घुम–घुम कर लोगों को समझाती है, बताती है और जानकारी भी देती है कि कुंआ का पानी स्वस्थ्य रहने के लिए बहुत ही जरूरी है।

कुँआ का ग्रामीणों पर प्रभाव :–

आज मरछिया कुँअर के संदेष से प्रभावित हो करके गाँव के 25 परिवार में से 20 परिवार के लोग इस कुंआ के पानी का उपयोग करते है। जो लोग भी इस पानी को पीते है उनको पेट से संबंधित बिमारी पूरी तरह ठीक रहता है। गैस्टीक की समस्या में अब लोग दवा नहीं लेते है बल्कि सिर्फ कुंआ के पानी का उपयोग करते है। आज गाँव के सभी लोग मरछिया कुँअर को इस अच्छे काम के लिए बधाई देते है और उनकी लंबी उम्र के लिए दुआ भी करते है कि मरछिया कुँअर ने गाँव के लोगो की आँखे खोली और उन्हें चपाकल से निकाल कर कुंआ के पानी के लिए प्रोत्साहित किया।